रेडियो मेरा प्रिय साथी

सूर्य प्रकाश जीनगर

253-ए, हरि सदन, इन्दिरा कॉलोनी, फलोदी, जिला जोधपुर (राजस्थान)-342301

मो. 9413966175

रेडियो से मेरा रिश्ता बचपन से रहा है। मेरे पिताजी के पास रेडियो था। तब हम आकाशवाणी केन्द्र जोधपुर से प्रसारित सभी कार्यक्रमों का आनन्द लेते थे। जब मैं सातवीं कक्षा में पढ़ता था, तब पहली बार आपकी फरमाइश कार्यक्रम के लिए पत्र लिखा। करीब सप्ताह भर बाद गीत की फरमाइश के साथ हम सभी बच्चों के नाम प्रसारित हुए। पहली बार रेडियो पर अपने नाम एवं पसन्द का गीत सुनकर हमारा मन मयूर की तरह नृत्य करने लगा। यह खबर पूरे परिवार और मोहल्ले में रेडियो सुनने वाले सभी लोगों को मालूम हुई, तब सभी खुश होकर हमारी तारीफ करने लगे। हमें ऐसा लगा, मानो कोई किला फतह कर लिया हो। परिवार में हम सभी बच्चे रविवार को चुनमुन कार्यक्रम जरूर सुनते थे। बड़ा मजा आता था। थोड़े बड़े हुए, तब युववाणी कार्यक्रम चाव से सुनने लगे। सामान्य ज्ञान प्रश्नोतरी से हमारे ज्ञान में वृद्धि होने लगी और गीत सुनकर मन प्रसन्नता से खिल उठता। इस तरह हमारी जिज्ञासा में बढ़ोतरी होने लगी। पढ़ाई के साथ-साथ रेडियो से हमारी मित्रता होने पर भाषा, स्वभाव एवं व्यवहार में बहुत बदलाव आने लगा। पुराने बाजार में दुकान पर सिलाई कार्य करके पिताजी सांय घर लौटते तो बी.बी.सी. लंदन से प्रसारित समाचार सुनते। हमें देश-विदेश की खबरों की जानकारी देते। पिताजी हमारी पढाई-लिखाई पर भी पूरा ध्यान देते थे। धीरे-धीरे हमें विविध भारती सेवा मुम्बई, ऑल इण्डिया रेडियो, सीलोन की जानकारी देते रहे। पिताजी हमें बताते- रेडियो से हमारी एकाग्रता बढ़ती है, ज्ञान में वृद्धि होती है, गीत सुनने से मन सदैव प्रसन्न रहता है। हमारे परिवार में सभी को नये-पुराने गीत सुनने का गजब का शौक रहा है। इस तरह दिन-भर रेडियो चालू रहता। रात्रि 11 बजे बाद रेडियो को आराम मिलता। घर पर चाचाजी जूती बनाने का काम करते हुए गानों का लुत्फ उठाते। दिन-भर गीत गुनगुनाने की उनकी आदत पड़ गई। उनके पास चौबीसों घण्टे रेडियो का साथ रहता। जब पड़ोस में या मोहल्ले में चाचाजी जाते तो रेडियो को कन्धे पर लटकाकर ले जाते, दूसरे लोग भी झूमकर संगीत का आनन्द लेते थे। चाचाजी की रेडियो के प्रति दीवानगी इस कदर थी कि कोई भी रेडियो के हाथ लगाने से डरता था। मोहल्ले के जिन घरों में रेडियो नहीं होता था, वे लोग पड़ोसी के घर जाकर समाचार सुनते थे। रात्रि 8 बजे समाचार प्रसारित होते, तब सभी लोग बड़े ध्यान से खबरें सुनते थे। संचार के साधनों में रेडियो की पहुंच आम आदमी तक रही है।

आज टेलीविजन, मोबाइल एवं कम्प्यूटर के युग में रेडियो का अस्तित्व कम नहीं हुआ है। एफ.एम. सेवा के माध्यम से रेडियो के प्रति लोगों की रुचि में इजाफा हुआ है। गीत-संगीत के साथ मनोरंजन से भरपूर विभिन्न कार्यक्रमों का खजाना यहां मिलता है। मोबाइल पर रेडियो ऐप के माध्यम से श्रोताओं का बड़ा समूह दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा है। रेडियो का हमारे जीवन में बड़ा योगदान है। मानव मन प्रारम्भ से सुरमयी संसार से जुड़ा रहा है। विभिन्न वाद्य यंत्रों का प्रयोग एवं उन्हें सुनने से मन को आनन्द की गहरी अनुभूति होती है। रेडियो पर हर श्रोता वर्ग के पसंदीदा कार्यक्रम प्रसारित होते है, जिसे सुनकर हर कोई खिल उठता है। अपने अनूठे अंदाज एवं रोचकता से भरपूर कार्यक्रम आम जन में खूब लोकप्रिय रहे है। आज संचार तकनीकी के तीव्र जमाने में रेडियो सेट धीरे-धीरे कम हो रहे हैं, लेकिन गीत-संगीत के प्रति रुचि इस कदर बढ़ी है कि हर कोई कहे- गाता रहे मेरा दिल ......।

जोधपुर में मेरे दो वर्ष के शिक्षक प्रशिक्षण काल में रेडियो ने मेरा खूब साथ निभाया। हॉस्टल में रहते हुए अपने हाथ से खाना बनाते समय मेरे पास रेडियो रहता था। गीतों की सुमधुर प्रस्तुति से भोजन का जायका भी बढ़ जाता था। उस दौरान

"जोधपुर में मेरे दो वर्ष के शिक्षक प्रशिक्षण काल में रेडियो ने मेरा खूब साथ निभाया। हॉस्टल में रहते हुए अपने हाथ से खाना बनाते समय मेरे पास रेडियो रहता था। गीतों की सुमधुर प्रस्तुति से भोजन का जायका भी बढ़ जाता था। उस दौरान (1994-1996) विविध भारती मुम्बई मेरा पसंदीदा चैनल था। सभी उद्‌घोषकों की कर्णप्रिय आवाज अभी भी मेरे कानों में रस घोलती है।